राष्ट्रीय शक्ति
(National Power)

राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारण एवं उसकी सफलता के कुछ विशिष्ट आधार होते हैं जिनसे राष्ट्रीय शक्ति का निर्माण होता है। ज्ञातव्य है कि भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व तकनीकी एवं सैनिक तत्वों का मिला-जुला रूप राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण और सुरक्षा की गारण्टी प्रदान करता हैं। अन्य शब्दों में, वे तत्व जो राष्ट्र की सुरक्षा हेतु सुदृढ़ आधार उत्पन्न कर प्रादेशिक अखण्डता, सार्वभौमिकता व स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहायक होते हैं राष्ट्रीय शक्ति के अन्तर्गत आते हैं। वास्तव में यह वह शक्ति है जो देश के चतुर्मुखी विकास एवं अस्तित्व से जुड़ी होती है। शक्ति (Power) आज की राजनीति का आवश्यक तत्व है। **मार्गेन्थो** के शब्दों में, ''It is universal in time and space and is an undeniable fact of experience.''[1]

जहाँ तक शक्ति की महत्ता का प्रश्न है, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आज विश्व में शक्ति राजनीति (Power politics) का साम्राज्य है। वस्तुतः वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सामरिक परिवेश में तो बिना शक्ति के राजनीति सम्भव ही नहीं है। यही शक्ति राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की दिशा में प्रमुख बाधा है क्योंकि इससे शक्ति प्रदर्शन, शस्त्रीकरण व तनाव में वृद्धि तो हुई ही है साथ ही अधिकांश राष्ट्र अपने कुल राष्ट्रीय उत्पादन (G.N.P.) की अधिकांश धनराशि शक्ति (Power) प्राप्त करने में व्यय कर रहे हैं। जो भी हो, इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अब राष्ट्रीय अस्तित्व व हितों की सुरक्षा हेतु शक्ति का संघर्ष (Struggle for power) राष्ट्रीय नीति का अनिवार्य अंग बन गया है। इस संदर्भ में **Reinhold Niebuhr** का निम्न कथन उल्लेखनीय है–''There is no possibility of drawing a sharp line between the will-to live and the will-to-power.''[2]

नागरिक राष्ट्र की इकाई होते हैं तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में देश-विदेश से अपनी नीतियों, सन्धियों व उद्देश्यों से विदेशी शक्तियों को अवगत व प्रभावित करने का कार्य करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि विदेश नीति के निर्धारण में नागरिकों का योगदान होता है, वे ही राष्ट्रीय शक्ति के निर्माता हैं क्योंकि मानव राष्ट्रीय शक्ति (National power) के तत्वों को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्व है। राष्ट्रीय शक्ति को **E. H. Carr** ने निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा है[3]–

1. सैनिक शक्ति (Millitary power)। 2. आर्थिक शक्ति (Economic power)।
3. जनमत शक्ति (Power of opinion)।

वहीं दूसरी ओर **Carr** ने यह भी विचार व्यक्त किया है कि शक्ति अविभाज्य होती है।[4] लेकिन इसमें दो मत नहीं हो सकते हैं कि कई तत्वों से मिलकर ही शक्ति का निर्माण होता है। इन सभी तत्वों में सैन्य सबसे महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि–''Every act of the state in its power aspect is directed to war, not as a desirable weapon but as a weapon which it may require in the last resort to use.''[5]

राष्ट्रीय शक्ति से अभिप्राय
(Meaning of National Power)

राष्ट्रीय शक्ति का तात्पर्य उस क्षमता से है जिसके द्वारा कोई राष्ट्र अपनी इच्छा के अनुसार दूसरे राष्ट्रों को प्रभावित कर सके। इसकी परिभाषा करते हुए **George Schwarzenberger** ने लिखा है–''It

Scanned by CamScanner

(Power) is the capacity to impose one's will on others by reliance effective on sanction in case of noncompliance.''[6]

राजनैतिक सन्दर्भ में शक्ति को **H. J. Morganthau** ने निम्नांकित प्रकार स्पष्ट किया है–''In Political context power means the power of man over the mind and action of other man.''[7]

पेडेलफोर्ड तथा **लिंकन** के अनुसार–''यह शब्द (राष्ट्रीय शक्ति) राष्ट्र की भौतिक और सैनिक सामर्थ्य का सूचक है..... राष्ट्रीय शक्ति को हम शक्ति और सामर्थ्य का वह योग मान सकते हैं जो एक राज्य अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए तथा राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाता है।''[8]

हार्टमैन के अनुसार, ''राष्ट्रीय शक्ति से यह बोध होता है कि अमुक राष्ट्र कितना शक्तिशाली अथवा निर्बल है या अपने राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति करने की दृष्टि से उसमें कितनी क्षमता है।''[9]

आर्गेन्सकी के शब्दों में,–''अपने हितों के अनुकूल दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को प्रभावित करने की योग्यता का नाम शक्ति है। जब तक कोई राष्ट्र यह नहीं कर सकता, चाहे कितना ही बड़ा एवं सम्पन्न क्यों न हो, उसे शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता।''[10]

जबकि **Vernon Van Dyke** का विचार है कि –''Power is the particular type of influence in ability to effect the actions, thoughts or feelings of others.''[11]

मार्गेन्थो के अनुसार,–''राष्ट्रीय शक्ति राष्ट्र की वह शक्ति है जिसके आधार पर कोई व्यक्ति दूसरे राष्ट्रों के कार्यों, व्यवहारों और नीतियों पर प्रभाव तथा नियन्त्रण की चेष्टा करता है। यह राष्ट्र की वह क्षमता है जिसके बल पर वह दूसरे राष्ट्रों से अपनी इच्छा के अनुरूप कोई कार्य करा लेता है।''[12]

डॉ० महेन्द्र कुमार ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति की भूमिका की तुलना हाट अर्थ-व्यवस्था में धन की भूमिका से करते हुए बताया है कि धन और शक्ति की प्राप्ति मात्र से ही राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति नहीं हो सकती। अतएव, शक्ति/धन का उपयोग मात्र साध्य के रूप में न करके साधन के रूप में करके राष्ट्रीय हितों की पूर्ति सुनिश्चित करने की वांछित कोशिश प्रत्येक राष्ट्र को करनी चाहिए।

राष्ट्रीय शक्ति कोई वस्तु नहीं है अपितु राष्ट्रों के सम्बन्धों का एक भाग है। हर सम्बन्ध में शक्ति का तत्व होता है जिसे अन्य सम्बन्धों से स्पष्ट रूप से पृथक किया जा सकता है। धन, संसाधन (Resource), मानव शक्ति, हथियार, कूटनीति आदि ऐसे तत्व हैं जो राष्ट्रीय शक्ति के सहायक होते हैं किन्तु ये शक्ति के केवल यन्त्र हैं, इनकी उपस्थिति से ही कोई राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। ये तत्व तो केवल उस समय शक्ति प्रदान करते हैं जब उनका प्रयोग इस ढंग से किया जाय जिसका प्रभाव दूसरे राष्ट्रों पर पड़ सके। एक राष्ट्र दूसरे को प्रभावित करने के लिए जो विधियाँ अपनाता है वे निम्नांकित हैं–

1. फुसलाकर (By persuation)
2. पुरस्कृत कर (By offering reward)
3. दण्ड की धमकी देकर (By threating punishment)
4. शक्ति का प्रयोग कर (By use or force)

लेकिन कौन-सी विधि कब अपनाई जाये, यह परिस्थितियाँ राष्ट्रों की प्रकृति व व्यवहार पर निर्भर करती है।

आज प्रत्येक राष्ट्र शक्तिशाली बनने की होड़ में लगा है क्योंकि वह अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है तथा शक्ति अर्जित कर वह अपनी नीतियों के सफल क्रियान्वयन का आकांक्षी है। वस्तुतः, शक्ति प्राप्त

Scanned by CamScanner

करने की होड़ के पीछे शक्ति अर्जित करने का उद्देश्य छिपा हुआ दिखाई पड़ता है। **G. L. Dickinson** के शब्दों में–''The only way to keep the peace is for every state at the same time to be strong than every other.''

लेकिन वास्तविकता तो यह है कि शक्ति प्राप्ति की स्पर्धा ने ही शस्त्रीकरण को प्रोत्साहन दिया है तथा इसी होड़ से सभी राष्ट्र असुरक्षित महसूस करने लगे हैं क्योंकि शक्ति का कोई अन्त नहीं हैं।

राष्ट्रीय शक्ति के तत्व

यद्यपि राष्ट्रीय शक्ति का आंकलन मूलतः सैन्य शक्ति से ही किया जाता है तथापि शक्ति संरचना में अनेक तत्व समाविष्ट होते हैं। ये सभी घटक सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय शक्ति का सृजन करके अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उसकी भूमिका, स्थान व स्थिति का निर्धारण करते हैं। विशाल भू-क्षेत्र, जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, धन-बाहुल्य, उन्नत औद्योगिक क्षमता, अत्याधुनिक तकनीकी आधार, स्वस्थ राजनैतिक संरचना तथा असीम सैन्य शक्ति जैसे मुख्य घटकों की सुदृढ़ राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण में प्रमुख भूमिका होती है। ज्ञातव्य है कि इनमें से कोई भी पृथक व सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय शक्ति का सृजन करने में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक राष्ट्रों द्वारा इनका उपयोग दूसरे राज्यों को प्रभावित करने के लिए संयुक्त व सुनियोजित ढंग से नहीं किया जाता।

डॉ० महेन्द्र कुमार ने शक्ति के अवयवों को तीन भागों में निम्नवत बाँटा है–

1. **प्राकृतिक** (Natural)—इसमें भौगोलिक विशिष्टताएँ, प्राकृतिक संसाधन और जनसंख्या आदि आते हैं।

2. **सामाजिक** (Social)—इसमें आर्थिक विकास, राजनीतिक संरचना एवं राष्ट्रीय मनोबल सम्मिलित होते हैं।

3. **प्रत्ययात्मक** (Ideational)—इसके अन्तर्गत नेतृत्व, एवं उसकी बुद्धि प्रखरता व दूरदर्शिता जैसे तत्व निहित होते हैं।

दूसरी ओर **मार्गेन्थो** ने राष्ट्रीय शक्ति के दो प्रकार के तत्वों–स्थायी व परिवर्तनशील का उल्लेख किया है। इनके अन्तर्गत उन्होंने निम्नांकित तत्वों को सम्मिलित किया है–

(i) भूगोल (ii) प्राकृतिक साधन (iii) औद्योगिक क्षमता (iv) सैन्य तैयारियाँ (v) जनसंख्या (vi) राष्ट्रीय चरित्र (vii) मनोबल (viii) कूटनीति (ix) सरकार का गुण।

इसी प्रकार **स्टीफेन बी० जोन्स** ने राष्ट्रीय शक्ति के निर्णायक तत्वों को निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा है–

(1) भौगोलिक संसाधन।
(2) प्राकृतिक संसाधन।
(3) मानवीय संसाधन।
(4) सामग्री संसाधन।

पामर व पार्किन्स महोदय ने राष्ट्रीय शक्ति के तत्वों को निम्नवत वर्गीकृत किया है–

(i) गैरमानवीय तत्व–इसमें भूगोल व प्राकृतिक संसाधन सम्मिलित होते हैं।

(ii) मानवीय तत्व–इसमें तकनीकी ज्ञान, विचारधारायें, मनोबल और नेतृत्व को सम्मिलित किया गया है।

Scanned by CamScanner